

# नांदगांव टाइम्स



॥ जय श्री जलाराम ॥  
**श्री जलाराम प्रॉपर्टी डीलर**  
 उचित दर पर मकान, प्लेट, ड्रिपलैव, दुकान, ऑफिस, गोदाम, जमीन, प्लॉट की खरीदी-बिक्री हेतु संपर्क करें।  
 ऑफिस: बामनपुरी बस्टॉप के बाजू में, रामचंद्रन कान्, राजपुताना।  
 मो: 98274-61508, 83192-88559

बुधवार, 02 अक्टूबर 2024, राजनांदगांव

आरएनआई 30910/76

वर्ष 48, अंक 348, पृष्ठ 04, मूल्य 2 रुपये

## 15 नवंबर को छत्तीसगढ़ के हर जिले में मनाया जाएगा जनजातीय गौरव दिवस : सीएम

जनजातीय संस्कृति में छिपी है, गहरी आध्यात्मिकता, जनजातीय समाज ने हमें प्रकृति के संरक्षण का मार्ग दिखाया, देश के लिए संघर्ष करने की परम्परा जनजातीय परम्परा रही

**रायपुर।** मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने भावना बिरसा मुण्डा की जयंती के अवसर पर 15 नवंबर को छत्तीसगढ़ के हर जिले में जनजातीय गौरव दिवस मनाने की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 15 नवंबर को भावना बिरसा मुण्डा की स्मृति में जनजातीय गौरव दिवस मनाने का निर्णय लिया है। इस वर्ष भावना बिरसा मुण्डा की 150वीं जयंती है। छत्तीसगढ़ में भी इसे भव्य रूप से मनाया जाएगा।



मुख्यमंत्री आज राजनांदगांव रायपुर के न्यू सफ्टि हॉल में जनजातीय समाज का गौरवशाली अंतिम, ऐतिहासिक, कामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने की। विधायाक श्री भर्तृहरिदास राजवाड़े विशेष अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनजातीय समाज का गौरवशाली इतिहास रहा है। यह सोचकर गर्व होता है कि अनेक महान स्वतंत्रता सेनानियों का जन्म जनजातीय समाज में हुआ। अपने देश के लिए संघर्ष करने की परम्परा जनजातीय समाज में प्राप्ति है। शहीद वीर नारायण सिंह, गैदीसिंह, गुण्डाचरु जैसे अनेक महान नायकों ने अपना बलिदान दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूरी दुनिया आज जलवायु परिवर्तन की भीमर चुनौतियों से गुजर रही है। ऐसे में प्रकृति का संरक्षण बहुत आवश्यक है। जनजातीय समाज ने हमें प्रकृति के संरक्षण का मार्ग दिखाया है, जो आज भी अनुकरणीय है। जनजातीय समाज में प्रकृति की पूजा की जाती है। पूर्वी छत्तीसगढ़ में साल पेड़ में जब फल आते हैं तो सरहुल एवं मरवाड़ा में साल पेड़ में जनजातीय संस्कृति में गहरी आध्यात्मिकता छिपी है। प्रकृति को संरक्षित, प्रकृति के अनुकूल जीवन जीना। बड़े-छोटे, स्त्री-पुरुष में

किसी तरह का भेदभाव नहीं। सब बराबर हैं और प्रकृति का उपहार सबके लिए है। ये बातें हमें इस समाज से सीखने की आवश्यकता है। वास्तव में जीवन जीने की कला जनजातीय समाज से सीखनी चाहिए। जनजातीय समाज में दर्शन जैसी सामाजिक बुराई का अस्तित्व नहीं है। भावना बिरसा मुण्डा का शौर्य हमें हमेशा जीवन में साहस की राह दिखाता है। उन्होंने लोचन मुक्त समाज का सपना देखा था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हीं की परिकल्पना के अनुरूप प्रधानमंत्री जनम योजना प्रारंभ कर विशेष पिछड़ी जनजात के लोगों के जीवन में समृद्धि लाने का प्रयास किया है। प्रधानमंत्री कल हजारीबाग से प्रधानमंत्री जनजाति उन्नयन ग्राम अभियान की शुरुआत करके, जिसमें जनजातीय बहुत 63 हजार गांवों के 5 करोड़ से अधिक लोग लाभान्वित होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनजातीय लोग कभी दिखावा नहीं करते, उनकी सरलता-सहजता मन मोह लेती है। जनजातीय समाज की खानपान की



शैली को भी-शुगर जैसी लाफ्ट स्टार्च से जुड़ने योग्यतायें से दूर रखती है। उन्होंने उच्च शिक्षा विभाग द्वारा जनजातीय समाज का गौरवशाली अंतिम पर आयोजित यह कार्यशाला जनजातीय समाज के गौरव को पूरे समाज के सामने लाने में मौलिक का पथर साबित होगी। वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि देश के स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

इस समाज में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने 1857 क्रांति के पहले ही अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष की शुरुआत की। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेजों को बहुत नुकसान जनजातीय क्षेत्रों में हुआ, अनेक मौकों पर उन्हें मजबूर होकर पीछे हटना पड़ा। श्री कश्यप ने कहा कि अंग्रेजों ने जब बलर में रेल लाई बिछने का काम शुरू किया उसमें लकड़ी का उपयोग किया जाता था। जनजातीय समाज ने इसका विरोध किया और यह भाव जताया कि हमारा जंगल नहीं काटेगा।

## नगर निगम की सामान्य सभा के शेष विषय चर्चा उपरांत सर्व सम्मति से पारित

**राजनंदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** नगर पालिक निगम की सामान्य सभा की निगम सभागृह में शेष 7 विषयों पर आज 1 अक्टूबर 2024 को पूर्वाह्न 10:30 बजे से आहूत बैठक में 1 विषय प्रक्रिया पूर्ण करने वापस की गयी तथा शेष 6 विषय चर्चा उपरांत सर्व सम्मति से पारित किया गया। आज शेष 7 विषयों पर आयोजित बैठक में सभी विषयों में पारित द्वारा क्रमानुसार चर्चाकर निर्णय लिया गया, जिसमें विषय क्र. 5 में स्वर्ण रत्न का शुल्क निर्धारण एवं विषय 6 जाति प्रमाण पत्र बनाने वाले पर सदस्यों ने चर्चा उपरांत सर्व सम्मति से पारित किया। वहीं निगम कलोन सिटी परियोजना

अंतर्गत उपभोक्ता शुल्क की वसूली संपत्तिकर, समेकितकर के साथ जोड़ कर वसूली किये जाने संबंधी विषय की प्रक्रिया पूर्ण करने वापस किया गया। शेष विषयों क्रमशः विषय क्र. 8, 9, 10 व 11 में, प्लाई ओवर के नीचे रिक्त स्थल पर बावुन पाकिंग व्यवस्था नियम शर्तों एवं दर की स्वीकृति, लोक सेवा केन्द्र से प्राप्त सामाजिक सुरक्षा पेंशन के आवेदन की स्वीकृति एवं अनुमोदन तथा रेलवे स्टेशन पुराने सड़क कार्यालय के दुकानों की

स्वीकृति के अलावा अंतिम विषय में हाट बाजार व्यवसायिक परिसर स्थित प्रथम तल की दुकान क्र. 1 से 14 एवं दुकान क्र. 16 से 20 तक की प्राठ उच्चमन बोली की स्वीकृति चर्चा उपरांत सर्व सम्मति से पारित की गयी। सभी विषयों में सदस्यों ने चर्चा में भाग लिया, चर्चा उपरांत महापौर श्रीमती हेमा सुदेश देवगुप्त ने सदस्यों के प्रश्नों का उत्तर दिया, उसके पश्चात क्रम से सभी विषय सर्व सम्मति से

पारित किया गया। सामान्य सभा की बैठक में दोनों दिन उपस्थिति के लिये निगम अध्यक्ष श्री हरिनारायण पप्पू धकेला ने महापौर श्रीमती हेमा देवगुप्त, नेता प्रतिपक्ष श्री किशुन गुड्डा, आयुक्त श्री अभिषेक गुप्ता सहित महापौर परिषद के प्रभारी सदस्यों, पार्षदों, सांसद प्रतिनिधि, विधायक प्रतिनिधि, गणसभा नागरिकों व पत्रकारों एवं अधिकारियों कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। बैठक के अंत में पूर्व नामांकित पार्षद श्री इमरन देवांगन के पुत्र श्री मयंक देवांगन के आकस्मिक स्वर्गवास पर उन्हें दो मिनट की मौन श्रद्धांजली दी गयी।

## छत्तीसगढ़ न्याय यात्रा के 5वे दिन हफीज हुए शामिल

**राजनंदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** छत्तीसगढ़ न्याय यात्रा के 5वे दिन सारागांव से सड़क रायपुर पहुंची न्याय यात्रा में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक वैज का स्वागत अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष जगिदर नेता हफीज खान ने साधितो सहित जोरदार न्याय यात्रा का स्वागत पूरा माता से किया। साथ ही यात्रा में भाग लेकर न्याययात्रियों के साथ पैदल यात्रा की। न्याय यात्रा में मुख्य रूप से पूर्व कैबिनेट मंत्री मोहम्मद अकबर, पूर्व उपमुख्यमंत्री टी एस सिरिंदर, अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष महेंद्र खड्डा, विधायाक गण एवं बड़ी संख्या में कांग्रेसजन न्याय यात्रा में आज शामिल रहे।

## कमला कालेज में चलाया गया स्वच्छता अभियान

**राजनंदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** शासकीय कमलादेवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनंदगांव में स्वच्छता ही सेवा एवं कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना एवं परसोली के संयुक्त तत्वावधान में वृहद रूप से स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के समल स्टाफ तथा छात्राओं द्वारा संपूर्ण महाविद्यालय परिसर की सफाई की गई। स्वच्छता अभियान से पहले प्राचार्य डा. अलोक मिश्रा द्वारा छात्राओं तथा समल स्टाफ को स्वच्छता हेतु राश्ट्रीय दिवसी गयी।

## कौर नवरात्र पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक संपन्न

**खोंगराड़ (नांदगांव टाइम्स)।** कौर नवरात्र पर्व को लेकर 29 सितम्बर 2024 को थाना खोंगराड़ में शांति समिति की बैठक आहूत की गई। बैठक में बताया गया कि छत्तीसगढ़ की आराध्य देवी माँ बलेश्वरी के शादीय नवरात्रि पर्व पर अग्रिम धर्मसल खोंगराड़ में माँ के दर्शन का ज्ञापन व आशीर्वाद लेने लक्ष्मी की संपूर्ण दर्शननी चहुँपते हैं। साल में दो बार चैत्र व कारे नवरात्रि पर्व पूरी आस्था के साथ मनाया जाता है। वहीं इस बार नवरात्रि पर्व में देश प्रदेश से देवी दर्शन के लिए लगभग 10 लाख भक्तों की आने की संभावना बनी हुई है। नवरात्र पर्व के दौरान जिला प्रशासन द्वारा दर्शनार्थियों की सुरक्षा व्यवस्था के लिए दूसरे जिले से भी फौजें संग्रहित हवाई की तादाद में पुलिस जवान बल तैनात करके सुरक्षा व्यवस्था प्रदान की जायेगी। एवं के दौरान आने वाले ब्रह्मलुओं की सुविधा व मेले में सुरक्षा

व्यवस्था करने के उद्देश्य से स्थानीय प्रशासन द्वारा स्थानीय पुलिस थाना में शांति समिति की बैठक रखी गई, जिसमें अनुविभागीय अधिकारी मनोज मरकाम, पुलिस अनुविभागीय अधिकारी आशीष कुंजाम, थाना प्रभारी जितेंद्र वर्मा ने राय के पास गाड़ी पार्किंग, मोड़ियों पर दुकान की अतिक्रमण, निर्माणित पार्किंग स्थल के पार्किंग में पुलिस व स्वच्छ विभाग का संयुक्त नगर, पंचनी के दिन आदिवासी कार्यक्रम में सुरक्षा, नगर की जोड़ने वाले अंडर ब्रिज की फिर से खोलने और नवमी वाले दिन मौन वाजरा में विशेष पुलिस बल तैनात करने पर चर्चा की गई। बैठक में माँ बलेश्वरी मंदिर ट्रस्ट समिति अध्यक्ष मनोज अग्रवाल, सांसद प्रतिनिधि पार्षद सिंह मोंटी, नगर पालिका नेता अमित खड्डा, भाजपा युवा मोर्चा अध्यक्ष सुमित मिश्रा, कर्माकरीय शहर अध्यक्ष विजयराज सिंह चौहान, हरिहर पंथरी सहित पत्रकार व नागरिक गण उपस्थित थे।

## अग्रसेन जयंती महोत्सव : आज सांस्कृतिक संध्या कलेक्टर एवं एस पी होंगे सम्मानित

**राजनंदगांव (नांदगांव टाइम्स)।** श्री अग्रसेन जयंती महोत्सव सप्ताह के अंतर्गत 02 अक्टूबर, बुधवार को सांस्कृतिक संध्या का आयोजन पद श्री गोविंद राम निर्मलकर ऑडिटोरियम में किया जाएगा। आयोजनकर्ता अग्रवाल महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती मंजू खोखरिया, सचिव रीना अग्रवाल, कोषाध्यक्ष रेखा अग्रवाल, रमा अग्रवाल, सुनीता लोहिया, महिला मंडल से सुनिता अग्रवाल, निर्मला पसारी, एवं अध्यक्ष अनुराधा लोहिया



काया अग्रवाल तथा ब्रह्म अग्रवाल ने बताया कि इस कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि संभव अग्रवाल विलायेश राजनंदगांव एवं मोहित गान्गु पुलिस अधीक्षक राजनंदगांव होंगे। विगत दिनों में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण भी किया जाएगा। एक विजिति में मोहिना प्रभाती संभव अग्रवाल ने बताया कि आर्टिस्टोरियम में अनेकता में एकता नृत्य की शानदार प्रस्तुति होगी। रोमाना बलर कर कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं से समाज को प्रविष्टियों को प्रेरणादान मिल रहा है। इसे लेकर आग परिवारों में अपार उत्साह का माहौल है। अग्रवाल सभा के अध्यक्ष शरद अग्रवाल, सचिव अलोक बिरल, कोषाध्यक्ष अशोक अग्रवाल, शरद अग्रवाल (पीठा), परमजन्तु गोपाल, भावेश अग्रवाल, रमणीक अग्रवाल, अंकुश अग्रवाल तथा सूरज अग्रवाल, अग्रवाल सभा से दिनेश अग्रवाल, रावेन्द्र अग्रवाल, राधा खोखरिया ने बताया कि नगर उत्सव गणेश विसर्जन झाली की छे 'ने के जानलेवा शोर से मुक्त रखते हुए परंपरागत सिद्धांत के साथ संधा करने के लिए कार्यक्रम संभव अग्रवाल एवं एस पी मोहित गान्गु का अभिनंदन एवं सम्मान इस कार्यक्रम में अग्रवाल समाज की ओर से

किया जाएगा। दोनों प्रशासक अधिकारियों की इस सकारात्मक पहल की संस्कारधारी में मुक्त कंठ से प्रशंसा हो रही है। अग्रवाल नवयुवक मंडल के अध्यक्ष कर्ष लोहिया, सचिव वैजय अग्रवाल, अमन अग्रवाल, हरिंत अग्रवाल, हरिंत बाबुलाल अग्रवाल, अभिष अग्रवाल कोषाध्यक्ष सूरज अग्रवाल ने सभी आय जनों से सांस्कृतिक संध्या का आनंद लेने की अपील की है प्रथम अर्द्धि गोपाल, प्रथम अर्द्धि आदित्य गोपाल, प्रथम कीर्ति दिनेश बिरल, प्रथम स्वामी राहुल अग्रवाल द्वितीय ममता नवीन अग्रवाल, द्वितीय संगीता हरिंत अग्रवाल, द्वितीय पुष्पा ललित अग्रवाल, द्वितीय अरिता अग्रवाल नमको व्यंजन शोडम के, प्रथम संगीता हरिंत अग्रवाल, द्वितीय भावना अंकुश अग्रवाल, द्वितीय नीति मुकेश अग्रवाल एवं मित्र गेम, अनुराधा लोहिया, एक मित्र गेम, पुष्पा अग्रवाल। आकस्मिक गेम दिनेश आर्यु, दिनेश लोहिया मटका फेड प्रतियोगिता में प्रथम गौरव अग्रवाल द्वितीय किरिष अग्रवाल मटका फेड सीनियर वन सरागणी द्वितीय अग्रवाल अग्रवाल चोगा दीर्घ जुनियर में अरुन अग्रवाल, निरूप अग्रवाल द्वितीय जोड़ी दीर्घ प्रतियोगिता में प्रथम अग्रवाल गोपाल किरिष गोपाल द्वितीय अग्रवाल रायच अग्रवाल जोड़ी दीर्घ में महिला वर्ग सुवर्ण प्रथम अग्रवाल, मस्मि महेष अग्रवाल, द्वितीय रमिनी विकास अग्रवाल, रीना पिच अग्रवाल एवं आज की प्रतियोगिता - स्पो स्क्वैट, स्ली सर्वकंड, 100 मीटर दौड़ 200 मीटर दौड़, नौगु दौड़, महिला मंडल की प्रतियोगिता - वेस्ट परटेनल के परिधान ताक मेहता का उत्तरा चम्पा, आकस्मिक प्रतियोगिता।

# स्वच्छता ही सेवा 2024

17 सितम्बर - 2 अक्टूबर 2024

## स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता

### स्वच्छता अभियान कार्यक्रम

प्रातः 9 बजे, 2 अक्टूबर 2024  
 पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम,  
 रायपुर

विष्णु के सुरासन से खैर रहा छत्तीसगढ़

श्री विष्णु देव साय  
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी  
जाननीय प्रधानमंत्री

मे जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करें

SAWAD R.O. NO. 41618/125

Visit us : @nandgaonCMO \ @nandgaonCMO \ @nandgaonCMO \ @nandgaonCMO \ @SPN3Chattisgarh \ @SPN3Chattisgarh \ @www.dppn.gov.in



ज्ञान मंथन

- 1) वंदना-3 को किस रॉकेट से लांच किया गया है?
- 2) नए संसद भवन का निर्माण किस परियोजना के तहत किया गया है?
- 3) कौन प्रथम जनजातीय लोकसभा अध्यक्ष थे?
- 4) राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के निर्वाचन में विवाद के मामले को किसको प्रस्तुत किया जाता है?
- 5) उत्तरी अमेरिका का प्रवासी पक्षी लाफ़िंग गल पहली बार भारत के किस राज्य में देखा गया है?

RamaQuiz (Pappu Ganesh)



उत्तर माला

- (1) एलवीएम3-एम4 (2) सेंट्रल विस्का प्रतियोगिता योजना (3) पी ए स्मॉल (4) भारत का उच्चतम न्यायालय (5) केरल

10 वर्षों रहे रक्तदान से जुड़ी भातियां को दूर करने व 32 बार रक्तदान करने हुए सम्मानित

राजनंदागांव (नांदगांव टाइम्स)। विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर भारतल स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी स्मृति स्वास्थ्यकोष चिकित्सा महाविद्यालय संयुक्त चिकित्सायुद्ध द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन करने वाली संस्थाओं के सम्मान समारोह का आयोजन महिंद्रा कॉलेज के ऑडिटोरियम में किया गया। जिसमें धर्मनगरी के 32 बार के रक्तदाय व नागसेन युद्ध विहार

युव डोंगरगढ़ के सदस्य प्रवेश सहारे एवं मिले के विभिन्न सेवा भारी संस्था सम्मानित हुईं इस अवसर पर डॉक्टर कुंजु भूमि, डॉ. रिकू, स. खरंड बैक प्रभारी चुनेस साहू, डॉ. एएस भाटिया, समाजसेवी फौज जैन, नाथिना बुद्ध, आर्यल आरुणाया नवदुर्गि फर्गुसन व अन्य सामाजिक संस्था के प्रमुख लोग मौजूद रहे।

2014 से कर रहे हैं रक्तदान के प्रति फेली भातियां  
रक्तबीर प्रवेश सहारे वर्ष 2014 में एक दुर्घटना में बायल महिल को मृत्यु रक्त को की कारण हुई जिससे निराल हो गए 3 दोस्तों के साथ निराला लगातार रक्तदान के प्रति फेली भातियां को दूर करने के लिए प्रयासरत हैं। वे अभी तक 32 बार रक्त दान कर चुके हैं। उनके माता-पिता, पति व छोटा भाई दोस्तों का भी रक्त दान के आयोजन प्रयत्न करते हैं। उनके द्वारा कौनोना करते व अन्य समय पर विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के सहयोग के माध्यम से लगातार गैर व शहरी में अभी तक कुल 2000 लोगों से न्यूडाना शिविरों व अस्पतालों में जाकर मदद की जा चुकी है। जिसमें नागसेन युद्ध विहार युव डोंगरगढ़ व मुस्लिम युव संगठन, साहू समाज, सिद्ध समाज के युवाओं व अन्य सामाजिक व छात्र युवा मंच का प्रमुख रूप से योगदान निराला रहा है। हर पर तिरोणा की तब पर हर पर रक्तदान की शुक्रआता को गई समाज में फेली रक्तदान के प्रति नकारात्मक सोच को बदलने के लिए रक्तदान को जनअभिप्रेत बनाने के लिए हर पर तिरोणा को तब पर हर पर रक्तदान की शुक्रआता की गई जिसमें अपने व अपने पूर्वजों के जन्मदिनस मनुष्य दिवस, विवाह, शादी की सालगिरह के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें डोंगरगढ़ सहित अन्य गांव के सेवापानी संस्थाओं का सहयोग मिला रहा है साथ ही लोगों द्वारा अब अपने विवाह व अन्य अवसरों के निर्माण कार्य पर रक्तदान के लिए प्रेरित करने वाले सदस्य लिखे जाने की शुक्रआता की ताकि समाज को रक्तदान के लिए जागरूक किया जा सके।

शासन से मान्यता प्राप्त संस्थाओं में ही करें रक्तदान  
प्रवेश सहारे द्वारा लगातार शासन से मान्यता प्राप्त संस्थाओं में रक्तदान करने के लिए अपील की गई व ब्यड ब्यड में ब्यड डोनेटर एकसचैज ब्यड लेने की अपील की ताकि आपके द्वारा किये गये रक्तदान से किसी और को मदद की जा सके।

लोक रंग शैली नाच के सोन चिरेया दाऊ मंदराजी

सन् 70 के शुरुआती दशक में आकलनाची ले भैयालाल गेड्डेकर के आवाज में प्रसारित होइया गीत सोन के चिरेया बोले का रे., अबहुं भूपू ममाय रहिस है। नांदगांव के जूहेडा गीतकार रामजन साखी के ये गीत छत्तीसगढ़ी लोक रंग शैली नाचा के पुखा दाऊ मंदराजी के संगीतिक बैकरी के ज्ञान होय करत रहिस है। गीत जीन ल लोक सांस्कृतिक जागरणी संस्था चंदेनी- गोंदा के बुनियादी पहरा कहे जाय त.अतिथीको नइ होही। कावर कि ये गीत? है नांदगांव के कलाकार मन बर चंदेनी- गोंदा के दरवाजा खुले के माध्यम बनिस।

संस्कार मानी नगरी नांदगांव है शुरू ले ही कला- संगीत के क्षेत्र में बाजे रहिस है। यहां के बैरागी राजा हिमंभल दास जी है अपन संगीत के बल में नागपुर के भोसले राजा ले अपने रियासत क्षेत्र के टकोली (कर) ल माफकत्वाय ले रहिस है। राजा खंभर दास जी है घलो कला- संगीत के अनुगामी रहिस। ये वो जमाना रहिस जब बैरागी राजा मन ले सिरजे कला- संगीत के बगिया नांदगांव में संगीत के सूर है गुंजय। शहर के कामटी लघन में ठकुर हीरा सिंह गीतम के इहां संगीत की महफिल सजे। गांधी चौक के रामायण प्रचारक भवन में रामायण गायन के संग संगीत के सूर- ताल के गमक होवय करे। ये उठी जमाना रहिस जब छत्तीसगढ़ी लोक रंग शैली नाचा के

के पुखा दाऊ दुलार नाचें मंदराजी है नांदगांव के कोलवा मुंशी चौक को जेम्हदर स्यान के एक घर में रखय अउ उठा संगीत का दरबार सजाय। इहां लेखे रक्खत में मेरा गुजर,सकार हो जाय., सोन के चिरेया बोले का रे., बोस अनंतिना हिन्दी- छत्तीसगढ़ी के गीत, गजल, शास्त्रीय, अर्थ शास्त्रीय संगीत के गुंज होवय करे।  
दुर्गा चंडक 786 जन्म- एक बखत ले खर- लहरी के गुंज है राजा खंभर दास जी के कान में भरिस। कला- संगीत अनुगामी राजा खंभर दास अपन लोखे राजा ले रोक नइ सकिस अउ ओकर गोंद है अउने-अपन दाऊ मंदराजी के संगीतिक दरबार के छहर उठ परिस। साझ भेस में पहुंचे, राजा है कुछ देर सुनके बड़ आनीदा होइस। ये से? सम कलाकार मन गुण- बजाय में अतिक मन रहिस कि कौन आइस कौन गिस उठइ ध्यान नइ रहिस। कला- संगीत अनुगामी राजा जी है नाच कौई ले कुछ कहे चुपेचाय अपने गीत के महत म चले आइस। लेकिन आलत समन मने मेरा नाच, कि अतक बड़े दिग्गज लोक कलाकार मन उंखर राज में रहिये, एमन ल कुछ न कुछ देना चहिये। वो जमाना में राजा है बिलासल जाय करे। उड़े ले आख के बाद जब राजा जी है रामायन मनखे सखिस दाऊ जी में के

संगीतिक दरबार में पहुंचिस त, वो है, दाऊ जी ले लेके नाचा कलाकार मदन निपाद, जनाना परी जगन्नाथ निर्मलकर, छत्तीसगढ़ी गीतकार अउ गायक रामरतन साखी संग सबको झन ल सुनके अब्बड़ खुस होइस अउ दाऊ जी ल राज एगड़ी खननस उड़े नाचा परी जगन्नाथ ल बिलासल ले लगू सोनहा प्रक भेट करिस। नाचा परी जगन्नाथ तो वो लो पहिले? के नाचा में फुपड़ी के सखि नाचे। कलाकार मन के समान ले खुश दाऊ जी ने उंही चंडक में नवरात्रि पर्व में दुर्गा प्रतिमा रखबइस अउ रात में अपन रवेली नाचा पाटी के जोरदार नाचा कार्यक्रम रहिस, जेला देखें बर नंगे भीड़ जुलियय रहिस। वो दिन ले कोलवा मुंशी चंडक है, दाऊ जी के दुर्गा रखे ले दुर्गा चौक कहलाइस। ये है नांदगांव बर दाऊ जी के देन है.,  
नाचा- गममत ल उंवाई- बला देंब कि छत्तीसगढ़ी सुप्रसिद्ध रंग शैली नाचा के पुरोधा पुरुष दाऊ मंदराजी इही माटी के उपज हरे। वोखर जम है 1 अप्रैल सन् 1911 को शहर ले 7 कि.मी.दूर गांव रवेली में होय रहिस। वोखर पूरा पुरा नंदगांव सिंग मंदराजी अउ वोखर महाराी के नांव रेखेती, ददा के नांव रामाभानी साब रहिस। दाऊ जी है चिरेया- लिखई कलापुरी स्कूल में प्राध्यापी तक होय है। वो है इहां पहुंचे करे बर रवेली लेकनहपुरी आशय तो,

इंश के कारीगर तुलसी लोहार के ब्या ले निचकारा के गुंज सुनय। कला अनुगामी दाऊ जी है वो सिरान ले चिकारा बजाय के गुंज सौमिस, बाद में हारमोनियम पेली सीया उडिस। अउ वो पेल के खड़े साज नाचा इडर संगे लगे। अउ अइसे प्रवृत्त होइस कि महाराष्ट्र सीसा से लगे बागनदी क्षेत्र के मालगुजार रहे दाऊ जी है अपन बमानी-बावदोल ल नाचा कला, गीत- संगीत व कलाकार उपर उंखर कर दिस। उंखर इहां कलाकार मन खा-पी-अउ पड़े राहय। कई-कई दिन रहिके अपन कला ल माने अउ नाचा- गममत के कार्यक्रम देन बर चलो जाय। दाऊ है मदन निपाद,? इतवार जी, बुधवार, मल्लुबाला, पिछा बाई, माला,जगन्नाथ,देवी बाला,बुलबाला, ठाकुराम,बुलबा,बोडरा, स्वयं कुमार बैट,? गनु यादव, शिवप्रसाद, जयंती 786दर.आदि कलाकार संग छत्तीसगढ़ी नाचा- गममत ल नवं उंचाई दिंद। उड़े अपन मीरसा भाई बुधाना साब, नाचा परी देवीलाल नाग, सत्यमूर्ति देवाना न अपन स सलियुता लाभ? ले अइसे सला संगीत के ज्ञान दिंद कि आगु चल के अपन चंदेनी-गोंदा, 786नगर, न्यू थियेटर ( दिल्ली) जेसे संस्था के।

आचार्य कोश? अमात्य लखोली नाचा चौकी चौक राजनंदागांव ( 626185579 )

तिलक लगाकर,पर्यावरण शपथ के साथ हुई पदयात्री सेवा बैठक श्री बागेश्वर धाम में



राजनंदागांव (नांदगांव टाइम्स)। 3 अक्टूबर से आरंभ हो रहे माता शक्ति के पर्व नवरात्री में संयुक्त पदयात्री पंचाल श्री बागेश्वर मंदिर धर्माध्युट श्री बालरूप सेवा समिति मंच, दिया दिवा संघटन गावड़ी परिवार के साथ-साथ गगर की कन्दुवा मंडल सहित अन्य अनेक सेवा भारी संस्थाओं समाजों की सेवा के साथ, होने वाले पदयात्रियों के रुकने व सेवा हेतु आयोजन की रूपरेखा तय करने हेतु बैठक श्री बागेश्वर उत्सव भवन में सम्पन्न हुई। जिसके नारे में जानकारी देते हुए के संयोजक अजय गुप्ता, सौरभ खरंडेलवाला, सूरज गुप्ता ने बताया कि बैठक का आरंभ सर्वप्रथम सभी उपस्थित जनों की तिलक लगाकर स्वागत कर किया गया। तत्पश्चात्



संरक्षण के बारे में जानकारी श्री पाम्पले व सूचना परीक्स के माध्यम से दी जायेगी। अंत में सभी उपस्थित जनों द्वारा पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली गई। बैठक का संचालन सौरभ खंडेलवाल द्वारा किया गया व आभार प्रदर्शन सूरज गुप्ता द्वारा किया गया। उक्त सेवा बैठक में प्रमुख रूप से श्रीमती मधु खंडेलवाल, महेश जर्मा, रौलनद तिवाड़ी, लक्ष्मी गुप्ता, मनीष यादव, अजय गुप्ता, मधु अग्रवाल, शोभा चोपड़ा, विकास गुप्ता, विकास गुप्ता संपन,सौरभ गुप्ता गौरीजी, खरीदा गुप्ता, आदित्य संस्कारपानी के सेवापानी व्यक्तिव शामिल हुए। उक्त जानकारी समिति प्रचार प्रसार प्रभारी ईश्वर साहू द्वारा दी गई।

छत्तीसगढ़ में 27 प्रतिष्ठत आरक्षण व ओबीसी जगनगना के लिए ओबीसी महारथा में निकाली विद्याल महाश्वर लेली



राजनंदागांव (नांदगांव टाइम्स)। ओबीसी महारथा प्रवेश इकाई के आवाहन व ओबीसी महारथा के प्रदेश अध्यक्ष ओबीसी राधेश्याम, प्रदेश कोषाध्यक्ष महाराज कलिहारी, प्रदेश महासचिव एवं अधिका महेश बर्मा, सहसचिव पुरुषर देवाना एवं मनसुखदास साहू, बालोदर व्याक अध्यक्ष पवन साहू की उपस्थिति में राजनंदागांव विद्या ओबीसी महारथा के अध्यक्ष अधिका नरेश गंजी व महिला अध्यक्ष श्रीमती कान्ति मौर्य के नेतृत्व में ऊर्जावान कार्यक्रमों एवं सभी ओबीसी समाज के जिला अध्यक्षों, व्याक अध्यक्ष व अन्य पदाधिकारियों के द्वारा टिकित 30 सिस्टर को सांघ 5.30 बजे मालतरी ले के साथ बस स्टॉप हाउस नंदगांव से ग्राम कन पवन मंदिर कीक, गुडगाड़ा चौक होते हुए जूही रोड चलते हुए भद्रावती चौक से कालेकर फार्मालय जाकर कालेकर के निर्देश पर अनुविभागाय अधिकारी अतुल विश्वकर्मा को ज्ञापन सौंपा गया। ओबीसी समाज के लिए दो प्रमुख मामलों जिसमें से छात्रा संघ में 27 प्रतिष्ठत आरक्षण लागू करने एवं ओबीसी समाज का राष्ट्रीय जगनगना करने का, आचार्य राजनंदागांव के प्रमुख डॉक्टर प्रोफेसर केशव टांडेकर, सिद्धार्थ वीर, श्री अनेछी अपने पदाधिकारियों सहित प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होकर ओबीसी महारथा को समर्थन देते हुए सभा को संबोधित किया।

आदर्श ग्राम सुरगी में धूल के गुब्बारे से व्यापारियों सहित राहगीरों को उतारी पड़ रही है भारी परेशानी



राजनंदागांव (नांदगांव टाइम्स)। ग्राम कुहालोरी- सुरगी हल्दी राजनंदागांव सड़क मार्ग का नव निर्माण का कार्य चल रहा है। कई सालों से परेशान क्षेत्रवासियों को हर समय परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है. बारिश से सड़क फिसल पट्टी बन जाती है और बाघा धम जाने से लोगों को धूल के गुब्बारे से सड़क किनारे पर वाले, व्यापारियों, राहगीरों को भारी परेशान उठनी पड़ रही है।

मजबूत और टिकाऊ पूर्ण हो कुहालोरी - सुरगी हल्दी सड़क निर्माण का कार्य

व्यापारियों के दुकानों में धुस रहा है धूल के गुब्बारे मुख्य मार्ग सुरगी के व्यापारी गुण अपनी पीछा कहते हैं कि दुकान को खोकरके बेचना मुश्किल हो गया है.दिन पर दिन धूल के झोंकों से दुकान को कई बार सफायाकर करना पड़ता है भारी वाहनों के धुलने वाले पहियों से उड़ने वाली धूल उनके दुकानों में भर जाता है, इस मार्ग पर हर समय भारी वाहनों का आना जाना लगा रहता है। सुरगी ग्राम के ग्रामीणों ने बताया कि दिन रात धूल खान करना पड़ता है जिससे उनके आँखें,बाल,लवचा और बाग सबील विकल्प ले लोगों को आ रही है.सड़क किनारे के व्यापारी भाव्यो (दुकानदारों) ने बताया की धूल के कारण उन्हें दो बार खान करना पड़ता है। क्षेत्र के राहगीरों ने बताया कि हल्दी सुरगी कुहालोरी मार्ग का नवनिर्माण को जो कार्य चल रहा है हल्दी से सुरगी तक वो पहले कुछ स्थानों को खोड़कर जो इमारतकरण का कार्य किया गया है बारिश से सड़क भी परखबे उड़ गई है,जगह-जगह उखड़ गई है.क्षेत्रवासियों का कहना है कि इस सड़क का नया बनाव के लिए लोगों को लंबे लंबे इंतजार करना पड़ रहा है जो बार बार है वह भी पीछे से उखड़ा रहा है पहली

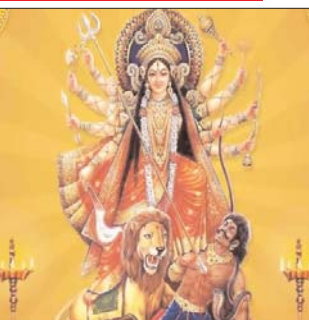
बलकुमारी देव तैतय देवियों की झांकी 3 व 1 अक्टूबर तक राजनंदागांव (नांदगांव टाइम्स) में

राजनंदागांव (नांदगांव टाइम्स)। प्रजापिता ब्रह्मसम्राट् ईश्वरीय विधिप्रकारण के स्थानीय सेवा केंद्र द्वारा 3 अक्टूबर व 1 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक गोकुल नगर के आगे, डोंगरगढ़ रोड, निवासी सस स्टेशन के पास जैन मनसरोवरमें केनय देवियों को झांकी सजाई जा रही है। सड़क इलाक़ीनिर्दिष्ट समय 7:00 बजे से रात्रि 10:00 बजे तक आम जनता के दर्शनार्थ निःशुल्क खुली रहती है।



धर्म समाचार....

धार्मिक मत है कि जगत जन्नी आदिशक्ति मां दुर्गा की पूजा करने से साधक को पुष्पां लोक पर सभी प्रकार के भौतिक एवं सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है। साथ ही जीवन में व्याप्त सभी प्रकार के दुःख एवं संकट दूर हो जाते हैं। ज्योतिषियों को मानें तो अग्रणी तिथि पर शिवव्रत याग का निर्माण हो रहा है। समान धर्म में शास्त्रीय नवरात्र का विशेष महत्व है। इस दौरान जगत जन्नी आदिशक्ति मां दुर्गा और नवरात्र की पूजा की जाती है। साथ ही उनके निमित्त नवरात्र का व्रत रखा जाता है। इस व्रत की महिमा का गुणगान शास्त्रों में निहित है। धार्मिक मत है कि शास्त्रीय नवरात्र के दौरान मां दुर्गा की पूजा करने से साधक की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सभी ही जीवन में सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है। अतः साधक ब्रह्मा धर्म में मां दुर्गा की पूजा करते हैं। वहीं, अग्रणी तिथि पर निराला मां मां दुर्गा की विधि पूजा की जाती है। आर्य, शुभ मुहूर्त एवं योग जतते हैं।  
दुर्गाशुभ शुभ मुहूर्त - वैदिक पंचांग के अनुसार, शास्त्रीय नवरात्र के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि 10



अक्टूबर को दोषहर भारतीय समयावसरा 12 बजकर 31 मिन्ट पर शुरू होगी। इस तिथि का समापन 11 अक्टूबर को दोषहर 12 बजकर 06 मिन्ट पर होगा। ज्योतिषियों गणना के अनुसार, 11 अक्टूबर को दुर्गाशुभ माहई जाएगी। साधक स्थानीय पंचांग एवं पंडितों की सलाह ले

कब है शास्त्रीय नवरात्र की दुर्गाष्टमी, नोट करें शुभ मुहूर्त एवं योग

सकते हैं।  
दुर्गाष्टमी शुभ योग - शास्त्रीय नवरात्र की दुर्गाष्टमी पर शिवव्रत याग का निर्माण हो रहा है। इस योग में मां दुर्गा की पूजा करने से साधक को मनोकामना सस की प्राप्ति होती है। इस योग का निर्माण दोषहर में हो रहा है। इस दौरान देवों के देव महोदय जगत की देवी मां गौरी के साथ विराजमान रहेंगे।  
सुकर्मा योग- शास्त्रीय नवरात्र की अष्टमी तिथि पर सुकर्मा योग का निर्माण हो रहा है। इस योग का समापन देर रात 02 बजकर 47 मिन्ट पर होगा। ज्योतिष सुकर्मा योग को शुभ मानते हैं। इस योग पर हर व्यक्ति को दुर्गा की पूजा करने से साधक को सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी।  
पंचांग  
सूर्योदय - सुबह 06 बजकर 20 मिन्ट पर  
सूर्यास्त - शाम 05 बजकर 55 मिन्ट पर  
चन्द्रोदय- दोषपट 01 बजकर 55 मिन्ट पर  
चंद्रास्त- रात 12 बजकर 19 मिन्ट पर  
ब्रह्म मुहूर्त - सुबह 04 बजकर 41 मिन्ट से 05 बजकर 30 मिन्ट तक  
विश्व मुहूर्त - दोषहर 02 बजकर 03 मिन्ट से 02 बजकर 50 मिन्ट तक  
गोष्ठी मुहूर्त - शाम 05 बजकर 55 मिन्ट से 06 बजकर 20 मिन्ट तक  
निर्गता मुहूर्त - रात्रि 11 बजकर 43 मिन्ट से 12 बजकर 33 मिन्ट तक

अक्टूबर महीने में कब है प्रदोष व्रत? नोट करें शुभ मुहूर्त एवं योग



शिव पुराण में वर्णित है कि प्रदोष व्रत का सस दिन अनुसर प्राप्त होता है। इस व्रत को करने से मनवाही सुचारु रीति में रहती है। इसके साथ ही जीवन में सुखित का आभार होता है। इस अवसर पर साधक नित्य भक्त से देवों के देव महोदय योग जगत की देवी आदिशक्ति से पार्वती को पूजा करते हैं। समान धर्म में प्रदोष व्रत पर्व को विशेष महत्व है। इस दिन देवों के देव महोदय को समर्पित होता है। इस दिन भगवान शिव संग मां पार्वती की विधि-विधान से पूजा की जाती है। साथ ही शुभ कार्यों में सहिद पाने के लिए प्रदोष व्रत रखा जाता है। इस व्रत को करने से साधक को सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। साथ ही जीवन में व्याप्त दुःख एवं संकट दूर हो जाते हैं। आर्य, अक्टूबर माह के प्रदोष व्रत की तिथि एवं शुभ मुहूर्त जानते हैं- पंचांग के अनुसार, आश्वि माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि 15 अक्टूबर को देर रात 03 बजकर 42 मिन्ट से शुरू होगी और अगले दिन यानी 16 अक्टूबर को देर रात 12 बजकर 19 मिन्ट पर समाप्त होगी। त्रयोदशी तिथि पर प्रदोष काल में भगवान शिव की पूजा की जाती है। इस प्रकर 15 अक्टूबर को प्रदोष व्रत मनाया जाएगा। इस दिन प्रदोष काल यानी पूजा का समय संध्याकाल 05 बजकर 38 मिन्ट से लेकर रात 08 बजकर 13 मिन्ट तक है। इस दौरान साधक भगवान शिव की पूजा-उत्सना कर सकते हैं। शुभ योगों - ज्योतिषियों की मानें तो प्रदोष व्रत पर शुभयोग का निर्माण दोषहर 03 बजकर 15 मिन्ट से हो रहा है। वहीं, समापन 16 अक्टूबर को सुबह 11 बजकर 42 मिन्ट पर होगा। इसके साथ ही दुर्लभ शिवव्रत याग का निर्माण हो रहा है। इस दिन भगवान शिव संध्याकाल के कालाश पर विराजमान रहेंगे। इसके बाद भगवान शिव नंदी की सवारी करेंगे। इन योगों में भगवान शिव की पूजा करने से साधक को हर कार्य में सफलता मिलती है।

